ओ३म

वेदाङ्ग

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार विभाग

Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula

JANUARY – MARCH ISSUE 1997
No. 12

संस्कार

पिछले अंक से आगे

उद्धारण के लिए पहली बार चोर ने डरते-डरते चोरी की थी, चोरी के रास्ते पर पहली बार चला था इसलिए डर तो लगा था परन्तु चोरी कर डाली थी। पकड़ा नहीं गया था इसलिए चोरी करने का संस्कार पड़ गया। दूसरी बार कम डर लगा, तीसरी बार दिलेरी से चोरी की, चौथी बार पकड़ा गया और संस्कारों के जमा होते-होते यह नतीजा हुआ कि जेल की काल-कोठरी (जेलखाना) में जा पहुँचा। पहली बार चोरी कर चुकने के बाद न पकड़े जाने पर यह समझना कि चोरी कर ली, फल से बच गये, गलत विचार है, क्योंकि अन्त में जाकर जो काल-कोठरी में जा बैठे वह शुरू में की गई चोरी का ही संस्कार-पर-संस्कार पड़ते रहने पर जो जोड़ जमा हो गया उसी का यह फल है।

तो फिर ये संस्कार रहते कहां हैं? हम ऊपर कह आये हैं कि हमारे कर्मों की निशानी, उनकी रेखा, मस्तिष्क (दिमाग) पर पड़ता रहता है जिससे दिमाग में परिवर्तन होता रहता है। परन्तु जो लोग पुनर्जन्म को माननेवाले हैं उनसे प्रश्न हो सकता है कि मरने के बाद दिमाग तो भस्म हो जाता है, फिर उन संस्कारों का निवास कहां रहता है, जिन्हें हम कहते हैं कि आत्मा उन्हें जन्म-जन्मान्तर तक लिये फिरता है।

संस्कार सूक्ष्म-शरीर में रहते हैं

वैदिक सिद्धान्त ने इस स्थूल - शरीर (चमड़ा से लेकर हड्डी तक) के भीतर एक सूक्ष्म-शरीर को माना है। आत्मा आग, पानी, मिट्टी आदि से नहीं बना हुआ है, उसका स्थूल - शरीर, जो कि मिट्टी, पानी, आग, हवा तथा आकाश से बना हुआ है, से सीधा संबंध नहीं हो सकता। जो चीज आत्मा तथा स्थूल-शरीर को एक साथ जोड़ता है, उसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं। सूक्ष्म-शरीर आत्मा तथा स्थूल-शरीर के बीच कार्य करता है। जो कुछ स्थूल-शरीर में होता है उसका समाचार सूक्ष्म-शरीर आत्मा तक पहुँचाता है। यही कारण है कि मस्तिष्क (दिमाग) पर जो संस्कार पड़ते हैं, रेखाएं खिंचती हैं, जिनका मेल जोड़ होकर मनुष्य का अपना रूप बन जाता है, वह सब मस्तिष्क से चलकर सूक्ष्म-शरीर हो जाता है। जब स्थूल-शरीर की मृत्यु हो जाती है तब सूक्ष्म शरीर की मृत्यु नहीं होती। सूक्ष्म-शरीर संस्कारों को लिए हुए जन्म-जन्मान्तर में, अर्थात् हर एक मृत्यु के बाद अपने साथ लिए फिरता है। सूक्ष्म-शरीर का स्थूल शरीर के साथ, संबंध नाभि (ढोंढी) से होता है। तभी जब कोई दुर्घटना अचानक होने लगती है तब पहले एकदम ढोंढी के जगह पर घबराहट मालूम होती है। सूक्ष्म-शरीर, द्वारा आत्मा शरीर को इस्तेमाल करता है। जैसे मोटर को चलाने के लिए पेट्रोल की टंकी को चाबी दी जाती है, वैसे शरीर की गाड़ी को चलाने के लिए आत्मा सूक्ष्म-शरीर को कंपन (vibration) देता है। मृत्यु स्थूल शरीर की होती है, सूक्ष्म-शरीर की नहीं। सूक्ष्म-शरीर आत्मा के साथ सदा बना रहता है। तब तक आत्मा के साथ बना रहता है जब तक मुक्ति नहीं हो जाती। हमारे विचार, हमारे अनुभव, हमारे संस्कार - इन सबका इकट्ठा किया हुआ रूप, सिमटा हुआ रूप, बीज रूप में इस सूक्ष्म-शरीर में रहता है। कर्मों की फल की जो समस्या थी - यह समस्या कि एक-एक कर्म का फल कैसे मिलता है, वे कर्म जब तक उनका फल नहीं मिलता किस स्थान में लिखे पड़े रहतें हैं - इस समस्या का उत्तर सूक्ष्म शरीर है। जैसे आम के बीज में पूरा आम का पेड़ समाया हुआ है उसी प्रकार सूक्ष्म-शरीर में सब-कुछ समाया रहता है।

जब हम सो जाते हैं तब स्वप्न में बिना इन आंखों के हम देखते, बिना इन कानों के हम सुनते हैं, बिना पैरों के हिलाए हम भागते हैं। यह बिना आंख के देखनेवाला, बिना कान के सुननेवाला, बिना पावों के भागनेवाला अगर सूक्ष्म शरीर नहीं है तो कौन है? जागते हुए भी कभी-कभी आंखों के खुले रहने पर भी हम नहीं देखते, कानों में शब्द के चोट करने पर भी हम नहीं सुनते। क्यों नहीं देखते जब आँख खुली हैं, क्यों नहीं सुनते जब कान खुले हैं? यह सब इसलिए क्योंकि सूक्ष्म-शरीर का ध्यान कहीं और लगा हुआ है।

यह सब लिखने का उद्देश्य इतना ही है कि कर्मों का फल मिलने के लिए अलग-अलग कर्म का फल मिलने की ज़रूरत नहीं पड़ती, सब कर्म मिलकर एक